

सजण तुंहिजी सिकड़ी सची आ राघव जे रंगड़े रची आ  
दिलिड़ी श्रीजू अमड़ि सींगारे, आशीशूं उचारे॥

जनक राज परिवार में प्यारल बालिड़ी रूप सां आयें  
जन्म वठण सां जनक किशोरीअ पद कमलनि खे भायें  
सेवा जी लगनि लगी आ जीय में जस जोति जगी आ  
हर हर रूप राशि निहारे॥ १॥

पाछे वांगियां पार्थिवि चंद्र जे पोयां सदां फिरीं  
पद कमलनि जो कुशल मंगल हर हर हरि खां घुरीं  
रेखा पद पद्य पसीं थी रीझी रीझी रस में रसी थीं  
अन्दरि नितु आरती उतारे॥२॥

श्रीजू अमड़ि सां गढ़िजी कोकिल गिरिजा राणी मनाई  
अनुरूप वरु मिले श्रीजू अमड़ि खे  
लिकी लिकी रोजु लीलाई  
स्वामिनि सुख चाह घणी आ  
दिल खे इहा वाट वर्णी आ  
जीउ जीउ श्रीजानकी पुकारे॥३॥

फूल बाग में जढ़हीं युगल खे हिक बिये जो दरसु थियो  
उन महल कोकिल बालिड़ी तुंहिजो सवलो दाउ पियो  
वाधाई दिलिड़ीअ दिनी आ रोम रोम रस में भिनी आ  
साकेत जी साहिबी सम्भारे॥४॥

धनुषु भगो ऐं लाऊं लधाऊं मिलिया युगल विहारी

लाद्रा गाए मंगल मनाए कोकिल करे किलकारी  
महल दरबान बनी आ मिली रस केल मणी आ  
मन मन्दिर में युगल विहारे॥५॥

श्रीजू अमड़ि जे द्राजे में जदहीं कोकिल अयोध्या आई  
श्रीजू महिमा गुनड़ा बुधाए श्रीराम अमां खे भाई  
सिय सहिचर नाम पयो आ श्रीरघुवर पाण चयो आ  
श्रीमैगसि बाग बहारे॥६॥